श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी, वेरावल
डिप्लोमा अभ्यासक्रम -(W.E.F 2020-21)

कक्षा	डिप्लोमा इन मन्दिर-व्यवस्थापन	समयावधिः	१ वर्षम्
प्रश्नपत्र -१	पूजापद्धति	गुणाः	७०
विषय कोड	६२ (DiTM)	पेपर कोड	६२१
युनिट	०३	क्रेडिट	०३

युनिट-१	गुणाः	धण्टा	क्रेडिट
एकोपचार, पंचोपचार, षोड्शोपचार, विष्णुत्रिंशोपचार एवं राजोपचार पूजा और विविध स्तोत्र एवं व्रतों का परिचय १.१ एकोपचार, पंचोपचार, षोडशोपचार, विष्णुत्रिंशोपचार एवं राजोपचार शास्त्रोक्त पूजाक्रम एवं परिचय। गुण-०९ १.२ विविध देवी-देवताओं के स्तोत्रों का परिचय। गुण-०८ शिवमहिम्नस्तोत्रम्, भवान्यष्टकम्, संकटनाशनगणेशस्तोत्रम्, जनमङ्गलस्तोत्रम्, यमुनाष्टकम्, मधुराष्टकम्, । १.३ विविध व्रतों का परिचय। गुण-०८ महाशिवरात्रीव्रतम्, जन्माष्टमीव्रतम्, श्रीरामनवमीव्रतम्, शारदीयनवरात्रव्रतम्, संकष्टचतुर्थीव्रतम्, ऋषिपञ्चमीव्रतम्, एकादशीव्रतम्, जयापार्वतीव्रतम्, वटसावित्रीव्रतम्, प्रदोषव्रतम्।	२५	१६	१

युनिट -२	गुणाः	धण्टा	क्रेडिट
आगमग्रन्थों का, मन्दिर की दैनिकक्रिया का, यज्ञ-ध्यान नामसंकीर्तन एवं भक्तिमार्ग का परिचय। २.१ शैवागम-शाक्तागम-वैष्णवागमों का परिचय। गुण-०७ २.२ मन्दिरों की दैनिक क्रियाओं में उत्थान-पूजन-शृङ्गार-भोग-आरती-शयन-ध्वजारोपण सम्बन्धी परिचय। ग्रहण के दौरान मन्दिर की शास्त्रोक्त आचारसंहिता गुण-०६ २.३ यज्ञ, ध्यान, नामस्मरण एवं नवधाभक्ति का संक्षिप्त परिचय। गुण-०७ - यज्ञ का महत्त्व। - ध्यान का महत्त्व। - नामसंकीर्तन का महत्त्व। - नवधाभक्ति का परिचय एवं महत्त्व।	२०	१३	१

REGISTRAR,
27 OCT 2020 Shree Somnath Sanskrit University
Veraval, Dist. Junagadh (Gujarat)

युनिट-३	गुणाः	धण्टा	क्रेडिट
पंचांग, मुहूर्तज्ञान एवं सामान्य संस्कृत संभाषण। ३.१ पंचांग परिचय - तिथि-वार-नक्षत्र-योग-करणों के नाम। गुण-०८ ३.२ मुहूर्तज्ञान - वास्तु-भूमिपूजन(खात)-उपनयन-विवाह-प्रतिष्ठा-यज्ञ-कथादि के मुहूर्त संबंधी विचार। गुण-०८ ३.३ संस्कृतसंभाषण- अपना सामान्य परिचय-दिनचर्या एवं विभक्तिप्रयोग वाले वाक्य। गुण-०९ - अपना सामान्य परिचय। (ध्यातव्य- प्रश्नपत्र की गोपनीयता बनी रहे इस तरह से प्रश्न पूछा जायेगा। - पारिवारिक, क्षेत्रीय एवं व्यावसायिक सामान्य परिचय। - अपना प्रातःउत्थान से रात्रिशयन तक की दिनचर्या का संस्कृत में विवरण। विभक्ति प्रयोग में रिक्तस्थानों की पूर्ति। - सह, प्रति, नमः, दा-यच्छ, दुह, स्पृह, स्निह, अलम्, स्वाहा, स्वधा, कृते इत्यादि के प्रयोगवाले वाक्य।	२५	१६	१

संदर्भग्रंथसूचि :-

१ आह्निकसूत्रावलिः
२ ब्रह्मनित्यकर्मसमुच्चयः
३ पौराणकर्मदर्पणः
४ बृहत्स्त्रोत्ररत्नावली
५ कर्मकाण्डप्रदीपः
६ व्रतोद्यापनचन्द्रिका
७ आगमग्रन्थावली
८ बालबोधज्योतिषसारसमुच्चयः
९ मुहूर्तचिन्तामणिः
१० व्यवहारसाहस्री (संस्कृतभारती प्रकाशन)

27 OCT 2020
REGISTRAR,
Shree Somnath Sanskrit University
Veraval, Dist. Junagadh (Gujarat)

श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी, वेरावल

डिप्लोमा अभ्यासक्रम -(W.E.F 2020-21)

कक्षा	डिप्लोमा इन मन्दिर-व्यवस्थापन	समयावधिः	१ वर्षम्
प्रश्नपत्र -२	मूर्ति-शिल्पशास्त्र तथा प्रवचनपरंपरा का परिचय	गुणाः	७०
विषय कोड	६२ (DiTM)	पेपर कोड	६२२
युनिट	०३	क्रेडिट	०३

युनिट-१	गुणाः	धण्टा	क्रेडिट
प्रसिद्ध मन्दिरों के मूर्तिशास्त्र का परिचय। १.१ गुजरात के मन्दिरों के मूर्तिशास्त्र का परिचय। गुण-०९ सोमनाथ मन्दिर, द्वारिका जगत् मन्दिर, मोढेरा सूर्यमन्दिर,अंबाजी मन्दिर। १.२ भारत के मन्दिरों के मूर्तिशास्त्र का परिचय। गुण-०८ -जगन्नाथपुरी, बद्रीनाथज्योतिर्मठ, शृङ्गेरी, नाथद्वारा, तिरुपति-बालाजी, काशीविश्वनाथ, अक्षरधाम। १.३ भारत के मन्दिरों में मनाये जानेवाले उत्सव एवं महोत्सवों का वर्णन। गुण-०८ - उपर निर्दिष्ट मन्दिर एवं इनके अलावा अन्य मन्दिरों में भी मनाये जानेवाले उत्सव व महोत्सवों का वर्णन।	२५	१६	१
युनिट-२	**गुणाः**	**धण्टा**	**क्रेडिट**
भारतीय शिल्पशास्त्र-स्थापत्यकला एवं मन्दिरों का ऐतिहासिक महत्त्व। २.१ मन्दिरों के शिल्पशास्त्र एवं स्थापत्यकला का परिचय। गुण-०७ २.२ भारत के सुप्रसिद्ध एवं सुप्रतिष्ठित किसी भी चार मन्दिरों का ऐतिहासिक महत्त्व। गुण-०६ २.३ मन्दिरों की आवश्यकता एवं मन्दिरों का आध्यात्मिक महत्त्व। गुण-०७	२०	१३	१
युनिट-३	**गुणाः**	**धण्टा**	**क्रेडिट**
प्रवचनपरंपरा का परिचय। ३.१ भारतीय शास्त्रों में कथा एवं प्रवचनों का महत्त्व। गुण-०९ श्रीमद्वाल्मीकीयरामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवतमहापुराण, शिवपुराण, श्रीमद्देवीभागवत, श्रीमद्भगवद्गीता, श्रीरामचरितमानस, शिक्षापत्री, सत्संगीजीवन। ३.२ सामाजिक परिवर्तन में मन्दिरों के माध्यम से हो रहे कथा-प्रवचन-सत्संगों का योगदान। गुण-०८ ३.३ नृत्य, नाटक, वाद्य, गान, भजन, धून का महत्त्व। गुण-०८	२५	१६	१

27 OCT 2020
REGISTRAR,
Shree Somnath Sanskrit University
Veraval, Dist. Junagadh (Gujarat)

श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी, वेरावल

डिप्लोमा अभ्यासक्रमः (W.E.F 2020-21)

कक्षा	डिप्लोमा इन मन्दिर-व्यवस्थापन	समयावधिः	१ वर्षम्
प्रश्नपत्र -३	प्रशासन एवं व्यवस्था	गुणाः	७०
विषय कोड	६२ (DiTM)	पेपर कोड	६२३
युनिट	०३	क्रेडिट	०३

युनिट-१	गुणाः	धण्टा	क्रेडिट
मन्दिरों में धार्मिक ट्रस्ट संरचना में कानुनी व्यवस्थातंत्र की आवश्यकता एवं पवित्र यात्राधाम विकास बोर्ड का परिचय। १.१ मन्दिरों में धार्मिक ट्रस्ट की संरचना एवं ट्रस्टियों का दायित्व। गुण-०८ १.२ धार्मिक ट्रस्ट संरचना में कानुनी व्यवस्थातंत्र की आवश्यकता का विवरण। गुण-०८ १.३ पवित्र यात्राधाम-विकास-बोर्ड की भूमिका एवं परिचय। गुण-०८	२५	१६	१
युनिट-२	**गुणाः**	**धण्टा**	**क्रेडिट**
दर्शनार्थियों सम्बन्धी व्यवस्थापन। २.१ मन्दिरों में दर्शनार्थियों की विभिन्न व्यवस्थाएँ। गुण-०७ -दर्शनव्यवस्था-प्रसादव्यवस्था-भोजनव्यवस्था-आवासव्यवस्था-प्रार्किंगव्यवस्था-वयोवृद्ध एवं दिव्यांग दर्शनार्थियों की विशेष व्यवस्था-धार्मिक-साहित्य एवं वस्तुविक्रय की व्यवस्था-80-6. करमुक्त दान और हिसाब की व्यवस्था-जनसंपर्क एवं मार्गदर्शनव्यवस्था। २.२ मन्दिर की स्थावर संपत्ति की जाँच एवं व्यवस्था तथा विकास। गुण-०६ २.३ मन्दिर की स्वच्छता-उद्यान-गौशाला एवं सामाजिक दायित्व का वहन। गुण-०७	२०	१३	१
युनिट-३	**गुणाः**	**धण्टा**	**क्रेडिट**
डीजीटल-प्लेटफॉर्म से मन्दिर का प्रचार-प्रसार एवं सामान्य अंग्रेज़ी एवं कम्प्युटर ज्ञान। ३.१ डिजीटल-प्लेटफॉर्म के माध्यम से मंदिर का प्रचार- प्रसार, गुण-०९ ऑनलाईन दर्शनस्रोत, ऑनलाइन पूजा स्रोत एवं अन्य स्रोतों का सविस्तार विवरण। - ऑनलाईन मार्गदर्शन एवं जनसम्पर्क विवरण। ३.२ सामान्य अंग्रेज़ी परिचय- मन्दिर के विविध कार्यक्रमों की अनुमति हेतु पॉलिस अधीक्षक को अंग्रेज़ी में पत्र एवं सामान्य मन्दिर की माहिती प्रदायक वार्तालाप। गुण-०८ ३.३ कम्प्यूटर का सामान्य परिचय- इन्टरनेट, पावरपोईन्ट प्रेझन्टेशन, वर्ड एवं एक्सेल का परिचय, दृश्य-श्राव्य उपसाधनों से (Light and Sound Show) से मन्दिर का सर्वविध प्रचार-प्रसार। गुण-०८	२५	१६	१

मन्दिर-व्यवस्थापन-पदविका अभ्यासक्रम के हेतु

१) इस अभ्यासक्रम से छात्रों में अध्यात्म का संचार हो। और मनुष्य धर्माभिमुख हों।

२) इस अभ्यासक्रम से छात्रों में मूर्तिपूजा का महत्त्व स्पष्ट हो।

३) इस अभ्यासक्रम से छात्रों को मन्दिरों के शिल्पस्थापत्य कला का परिचय हो।

४) इस अभ्यासक्रम से छात्र कथा-प्रवचन एवं सत्संग से अच्छा संस्कारी मानव बने।

५) इस अभ्यासक्रम से छात्र मन्दिर का व्यवस्थापन एवं प्रशासन का ज्ञाता बने।

६) इस अभ्यासक्रम से प्रत्येक नागरिक धर्माभिमुख बने।

REGISTRAR,
Shree Somnath Sanskrit University
Veraval, Dist. Junagadh (Gujarat)
27 OCT 2020